डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 02/06/2021
Page No.:

विषय - संस्कृत, बी.ए. स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश

गद्यांश व्याख्या

अमृतसहोदरापि कटुकविपाका । विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना । पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया ।

अर्थ - (अमृतसहोदरापि कटुकविपाका) अमृत की सगी बहिन होने पर भी यह लक्ष्मी अन्त में कड़वी लगने वाली है। (विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना) शरीर धारिणी होती हुई भी प्रत्यक्ष न दिखलाई देने वाली है। (पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया) सर्वोत्तम पुरुष (विष्णु) में अनुरक्त होते हुए भी दुष्ट जन की प्रिया है।

टिप्पणी -

समुद्र मन्थन के समय अमृत के साथ ही पैदा होने से यह उसकी सगी बहिन है फिर भी कड़वी लगती है - यह विरोध है, क्योंकि अमृत के साथ समान उदर से उत्पन्न होने के कारण इसे मधुर होना चाहिए था। 'कटुविपाका' का भाव है - दूसरों को सताने का हेतु होने से इसका परिणाम सदा दुःखदायी होता है। शरीर धारिणी होती हुई भी चाक्षुष प्रत्यक्ष के योग्य नहीं - यह विरोध है, किन्तु श्लेष से 'विग्रहवती' का अर्थ

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough."
Scanned By Scanner Go

Date __/__/____ Page No.: ______

कलहकारिणी ले लें तो विरोध का परिहार हो जाता है। भाव यह है कि परस्पर संग्राम व कलह को उत्पन्न करने वाली होती हुई भी स्वयं दृष्टिगोचर नहीं होती। उत्तम पुरुषों में आसक्त होती हुई भी दुष्टजनों से प्रीति रखती है- आपाततः यह विरोध है किन्तु पुरुषोत्तम शब्द यहाँ नारायण का वाचक है। भगवान् कृष्ण गीता में स्पष्ट कहते हैं:-

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥
(गीता 15-18)

अर्थात् क्योंकि मैं क्षर से परे और अक्षर से भी उत्तम हूँ, अतः लोक और वेद में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। लक्ष्मी नारायण प्रिया है यह बात पुराण प्रसिद्ध है। तथापि प्रायः दुर्जनों की ही प्रीति करती है।

पदव्याख्या-

अमृतसहोदरा - समानम् उदरं यस्याः सा सहोदरा (बहु०) अमृतस्य सहोदरा (ष० तत्पु०)। कटुकविपाका - कटुः विपाको यस्याः सा (बहु०) = दुःखदायी परिणाम वाली। विग्रहवती - विग्रह + मतुप् + ङीप् प्र० ए०। अप्रत्यक्षदर्शना - प्रत्यक्षं दर्शनं यस्याः सा प्रत्यक्षदर्शना (बहु०) न प्रत्यक्षदर्शना (नञ्)। पुरुषोत्तमरता - पुरुषेषु उत्तमः पुरुषोत्तमः (स० तत्पु०) पुरुषोत्तमे रता (स० तत्पु०)।

"Failure comes only when we forget our ideals and objectives and principles." - Jawaharlal Nehru
Scanned By Scanner Go

खलजनप्रिया - खलाश्च ते जनाः खलजनाः (क०धा०) खलजनानां प्रिया खलजनप्रिया (ष० तत्पु०) । इति ।

Scanned By Scanner Go